अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका

कुआर अंजोरिया 2060 विक्रमी / अक्टूबर 2003 ईस्वी साल: 1 अंक: 3

एह अंक में :

सम्पादक के आलेख	डा. राजेन्द्र भारती	2
आपन आपन सोच - कहानी	डा.श्रीप्रकाश पाण्डेय	3
लोकगीतन में हंसीमजाक - लेख	डा0 भगवान सिंह 'भास्कर'	5
चिनगारी - लघुकथा	शिवपूजन लाल विद्यार्थी	8
दूगो गजल	शिवपूजन लाल विद्यार्थी	9
बारहमासा - कविता	सुरेश कांटक	10

सम्पादक के पन्ना

सम्पादकीय का बहाने

डा. राजेन्द्र भारती

'अंजोरिया डाट काम' भोजपुरी भाषा के साहित्य, संस्कृति, आ तीजतेवहार का संगे भोजपुरी माटी से दूर बसल भोजपुरिया भाई-बहीन के आपन देस आ भोजपुरी माटी के गमक, साहित्य, संस्कृति, आ तीजतेवहार के ईयाद दिवावल आपन कर्तव्य बूझत बा।

भोजपुरिया लोग सगरे संसारमें फइलल बा। ओह सबलोग का लगे पंहुचे खातिर इन्टरनेट से नीमन कवनो दोसर माध्यम नइखे। ई अलगा बाति बा कि इन्टरनेट पर देवनागरी फान्ट के समस्या एगो बड़हन समस्या बा। कुछ हद तक एहकर आसान समाधान करे के कोशिश कइले बानी जा बाकिर कुछ अक्षर दिहला में तबो दिक्कत बा। जइसे कि ट आ र आउर ड आ र के संयुक्ताक्षर। आशा बा कि रउरा सभे ए ह दिक्कत के समुझब आ हो सके त एहकर कवनो आसान समाधान बताएम।

भोजपुरिया संस्कृति के रक्षा आ भोजपुरी साहित्य के समृद्धी बदे इन्टरनेट के माध्यम से आप सभे तक पहुंचे के भरसक प्रयास 'अंजोरिया काम' करि रहल बा। एह काम खतिर अपना तन-मन से जुटल प्रकाशक के हम धन्यवाद देबे चाहत बानी जे सिर्फ भोजपुरी के प्रति अपना प्रेम का चलते इ काम करत बानी।

श्रद्धेय रचनाकार लोग से भी निहोरा बा कि विदेश में बसल भोजपुरी भाई लोगन के धेयान में राखि के विशेष रूप से भोजपुरी संस्कृति के उजागर करे वाली रचना, लेख, निबन्ध, ललितनिबन्ध, आलेख, निकष, फीचर, कहानी, लघुकथा, लोककथा, कविता, गीत, लघु नाटक, नाटिका, एकांकी अविलम्ब एगो रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो आ आपन संक्षिप्त परिचय का संगे भेजीं आ अउरू रचनाकार मित्र लोगन से भिजवाई।

'अंजोरिया डाटकाम' देखी आ देखे के सलाह दीं। नीक लागे त प्रिन्ट निकाल के सुरक्षित करीं। रचनाकार के प्रकाशित प्रिन्ट कापी डाक से अवश्य भेजल जाला।

आप सभे के प्रतिक्रिया के इन्तजार बा।

राउरे

डा0 राजेन्द्र भारती

डा. राजेन्द्र भारती,
कदम चौराहा, बलिया - 277001

कहानी

आपन आपन सोच

डा. श्रीप्रकाश पाण्डेय

इ समाचार पूरा जोर शोर से फइलल। बाते अइसन रहे जेकरा से पूरा प्रशासन में हड़कम्प मचि गइल। मउअत, उहो भूखि से, ई त प्रशासन के नाक कटला के बराबर बा। उहो इ खबर अखबार में निकलल रहे कि सुर खाबपुर में एक आदमी खाना के अभाव में तड़प-तड़प के दम तुरि देले बाड़न। बात अतने रहित त कुछ पूर परीत। बात एकरा से आगे इ रहे कि उ आदमी दलित रहलन। ईंहा इ धियान देबे वाली बात बिया कि अउरी जात रहित त कुछ कम बवाल होइत। लेकिन एहिजा बात दलित के रहे, से हर राजनीतिक पार्टी आपन-आपन रोटी त सेकवे करित। कई पार्टी के नेता दलित के सुरक्षा के ठीक ओही तरे आपन मुद्दा बना लिहले जैसे पाकिस्तान आपन मुद्दा काश्मीर के बना लेले बावे।

बड़-बड़ भाषण होखे लागल। सरकार पर कई गो आरोप लागल। डी.एम. से लेके चपरासी तक ओह दलित के परिवार के सहायता करे के होड़ मचा दिहल। तुरन्त जतना जेकरा बस में रहे सहायता के घोषणा कइल। केहू ओकर लइकन के पोसे के जिम्मेदारी लिहल, केहू घर बनवावे के। कहीं से जमीन के केहू पट्टा लिखवा दिहल, त केहू नगद सहायता दिहल। सरकारी मंत्री जी अइले त घोषणा कइलन कि केहू के भूख से मरे ना दिहल जाई। आ उहो सरकार के तरफ से ओह दलित परिवार के चढ़ावा चढ़वले। सब कुछ हो गइल। एह बिचे सब इहे सोचल कि इ मुद्दा कइसहुं दबि जाई। इ केहू ना सोचल कि आखिर इ भूख से मरे के मउवत कहां से आइल। खैर हमहूं अगर सरकारी कर्मचारी रहितीं त सोच के कवनों जरूरत ना रहित। हम त एह मामला के दबइले करितीं। लेकिन इ मौत टाले के कई बरिस से प्रयास करत रहनी लेकिन उहे भइल जवन ना होखे के चाहीं।

एह मउवत के बिया बीस बरिस पहिले बोआ गइल रहे। जब चउदह बरिस के उम्र मे रामपति के बिआह बारह बरिस के सुनरी के संगे तई भईल। चुंकि रामपति हमरा उम्र के रहले त हम उनुका के जानत रहनी। उनका बिआह के समाचार सुनि के हमरा बड़ा दुख भईल। एह खातिर ना कि उनुकर बिआह चौदह बरिस में होत रहे एह खातिर कि उनुकर बिआह हमरे उमिर के रहल त होत रहे आ हमार अभी तिलकहरूओं ना आवत रहले स। इ दुख जब हम अपना चाचा से सुनवली त उ कहले कि ''आरे बुरबक तोरा त पढ़ि लिखि के बड़ आदमी बनेके बा। उ त चमार हवन सं। उन्हनी के कईसहू बिआह हो जाता इहे कम नईखे। उन्हनी के जिनगी के इहे उद्देश्य बा कि खाली कवनों उपाई लगा के बिआह कई ल। अउरी भेड़-सुअर अइसन लईका बिआ। एह से इ फायदा होई कि उन्हनी के परिवार बढ़ि त लोकतन्त्र में पूछ होई।'

सुनरी के बारह साल के उमिर अउरी ओह पर पियरी से जइसे देहि सूखि गइल होखे ओह तरे बिना हाड़-मांस के काया बिआह के बाद तुरन्ते गवना आ गवना के पनरह दिन बाद उ खेत में काम करे पहुंच गईल। रामपति कवनों पहलवान ना रहले। अभी त पाम्हीं आवत रहे। लेकिन शरीर के भीतर अभी बीर्य पूरा बाचल रहे अउरी एहकर फायदा उ सुनरी के देहिसे एह तरे उठवले रहले जइसे केहू उखं के चूसत होखे। लगातार पनरह दिन के रउनाईल अउरी उपर से खेत में काम करे के परि गईल। लाख कोशिश करत रहली, काम ठीक से नाहिए होखे। एगो त मासूम कली उहो रउनाईल। ओकर स्थिति देखि के हम कहनी कि ''तहरा से काम नईखे होत, तू घरे चलि जा।'' उ त शरमा के कुछु ना बोललसि लेकिन ओकर सासू कहली कि ए बबूआ अगर

इ घरे चलि जाई त एकर मरद बेमार बावे दवाई करावे के पईसा कहां से आई।'

'बेमार बावे ? उ कइसे।'

'इ बात तहरा ना बुझाई। बबुआ उ नान्ह में बिआह होला त लड़िका अक्सर बेमार पड़ी जालन स।'

'काहे ? हमारा कुछु ना बुझाइल।'

'तहार बिआह होई त समझि जईब।'

आगे कुछु ना पूछि के हम चुप लगा गइनी। लेकिन चमार के लइका बिआह होला त काहे बेमार होलन स इ जानल जरूरी रहे। इ बात हम चाचा जी से पूछनि त उ जवन बतवले ओकर सारांश इहे रहे कि उन्हनी के कम उमिर में बिआह होला। अउरी उ बिआह के बाद के काम करे खातीर पूरा परिपक्व ना होलन स एह कारण बेमार होखल इ कवनों नया बात नईखे।

'एहकर छुटकारा नईखे चाचा जी।'

'बा बेटा'

'उ का ?'

'उ इ कि जतना भी जनता अशिक्षित बिआ उन्हनी के शिक्षित कइल जाउ। इ बतावल जाउ कि बिआह के सही उमिर का बावे तब जाके उ बिआह कर स।'

'त इ कम उमिर ही उन्हनी के बेमारी के जरि बिया ?'

'हं बेटा, एहि से हम तहार बिआह ना कइनी हा। नाहिं त तहरो उहे हाल होईत।'

हम शरमा के इहे कहि पवनी - 'चाचा जी !'

बिआह के एक साल में एगो, तीन साल में दूगो, साढ़े चार साल में तीन गो, छव साल में चार गो, जब रामपति से सुनरी के लईका हो गइल, त हम रामपति से कहनी -'एगो त तहार कम उमिर में बिआह हो गइल। अब अतना जल्दी-जल्दी लइका होखी त कइसे चली। आखिर त उन्हनी के पोसे में खर्चो त लागि।'

'रउआ ओके का चिन्ता बा ? उ जन्म लेत बाड़न स त केहू के कई-धई के जीहन स।'

'लेकिन सोच.. ओह में से एकहू आदमी बनि पइहन स ?'

'ई रउआ ठीक कहतानी। आदमी त रउरे हई स। काहे से के रउआ बड़ आदमी न हई।'

'ना हमार कहे के इ मतलब नईखे। हम कहतानी कि कम रहितन स, पढ़ितन स आ, ओह से आगे चलि के अच्छा जीवन जीअतन स।'

'रहेदीं-रहेदीं। हमनी के लगे कवन धन, सम्पति बा। अगर भगवान अपना मन से संतान देत बाड़न त ओह में राउर का जाता ?' रामपति आगे बहस के कवनों गूंजाइस ना छोड़लन।

बियाह के अठवां साल में पांचवा, दसवां मे छठवां, अउरी बारहवां में सातवां लईका जब सुनरी के भईल त उ ठीक ओही तरे हो गइल जइसे पीयर आम हो जाला। रामपति त टी.बी. के मरीजे हो गइलें। उनकर माई भोजन के अभाव में पहिलहीं मरि गइल रहली। अब घरे कमाए वाला केहू ना रहे। लईकन के केहू खाए के कही से कुछ दे दीहल त ठीक, ना त उ छोटे-छोटे लइका भूखे रहि जा स। उनकर घर में टूटही पलानी अउरी एगो टूटही खटिया के अलावा अगर कुछ रहे तो एगो दूगो माटी के बरतन। आ ओकर हकीकत बयान करत दरि दरता।

एह बीचे एक दिन हम रामपति के घरे एह दया के साथ गइनी कि उनका खातीर कुछ दवा-दारू के बेवस्था कर दीं। घर में घूसते खांसी के आवाज सुनाई दीहल। एक ओर टूटही खटिया पर रामपति खांसत रहले। उनकर मेहरारू लगे बइठल रहली आ उनकर चार पांच गो लइका पोटा-नेटा लगवले एकदम लगंटे आसे-पास अपने में अझुराइल रहले स।

रामपति के देखि के हम कहनी – 'क ह रामपति का हाल बा ?''

रामपति हमरा किओर देखलें अउरी कहलें –'रउआ व्यंग करे आईल बानी कि हमार हाल पूछे ? रउआ सब के हमनी के खाइल पहिनल त नीक नाहिए लागेला, भगवान दू चार गो सन्तान दे देले बाड़न त रउआ सब के जरे के मोका मिल गइल।'

'हमार मतलब उ नइखे। हम त तहार कुछु मदद कईल चाहतानी।'

'धनि बानी रउआ आ राउर मदद। हमरा केहू के मदद ना चाहीं।' रामपति आपन मुंह हमरा ओरि से फेर लिहले।

'तू सोच। अगर तहरा कुछु हो गइल त तहार लइकन के का होई ?'

'होई का ? जइसे भगवान देले बाड़न ओहिसहीं जिअइहन। लेकिन रउआ चिन्ता मति करि।'

तब त उनुकर एगो लइका सुनरी के लगे रोअत आइल अउरी कहलसि – 'माई-माई खाए के दे। भूखि लागल बा।'

'हम कहां से दीं ? घरे बावे का ?' – सुनरी आपन दुख प्रकट कइली लेकिन उ लइका रिरिआ गइल। नतीजा इ निकलल कि 'द खाएके' मांगे के सजा चार पांच थप्पर खा के भुगतल। ई घटना से हमरा ना रहाइल। हम पूछनी – 'का हो रामपति, का एहि खातीर उन्हनी के जनमवले बाड़ ?'

'रहे दीं। रहे दीं। रउरा जइसन हम बहुत देख ले बानीं। रउआ सब दोसरा के दुख देखि के खूब मजा लेनी स।' – रामपति के बोले से पहिले सुनरी फुंफकार दिहली।

हम त घरे चलि अइनी लेकिन ओही सांझ रामपति मरि गइले। ओकरा बाद सरकारी आदमी अउरी राजनीतिक पारटीयन के नौटंकी शुरू हो गइल। ऐह में जवन भइल उ देखि के हम इहे सोचनी कि सुनरी आ रामपति के परिवार अनुदान के ना सजा के पात्र बा। अगर हमनी के इहे हाल रही ज देश के विकास अउरी जनसंख्या कम करे के सपना अधूरा रहि जाई।

डा.श्रीप्रकाश पाण्डेय, एम.ए., पी.एच.डी.
ग्राम-त्रिकालपुर, पो0-रेवती, जिला-बलिया

लेख

लोकगीतन में हंसी-मजाक

डा0 भगवान सिंह 'भास्कर'

जीवन में हास्य के बहुत महत्वपूर्ण स्थान बा। विनोदी स्वभाववाला व्यक्ति हमेशा खुद प्रसन्न रहेला आ सम्पर्क में आवे वाला हर व्यक्ति के प्रसन्न राखेला। हंसी-मजाक से मन के उर्जा मिलेला आ व्यक्ति कवनों काम हंसत-खेलत करि लेला। यदि मन ठीक बा त सब ठीक रही आ यदि मन ठीक ना रही त कुछउ ठीक ना रही। एही के तरफ इशारा करत कबीरदास जी कहले हईं -

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
कह कबीर पीव पाइहें, मनहीं के परतीत।

भोजपुरी में हंसी-मजाक के नीमन खजाना बा। भोजपुरी लोकगीत भी एकर अपवाद नइखे। देवर, भाभी, ननद, पति आपस में हंसी-मजाक करि के मन-बहलाव करत रहेले। कुछ उदाहरण देखीं-

मोरा पीछुवरिया बइरिया के गछिया,
हाय रे जियरा।
फरे फूले भुइंया लोटे डार, हाय रे जियरा।
बइर तूरे गइली रे जेठकी भउजिया,
हाय रे जियरा।
गड़ि गइले अंगुरी में कांट, हाय रे जियरा।

ननद अपना जेठकी भउजी के कहानी कहत बारी - हमरा पीछुवारी बइर के गाछ बा। ओइमें एतना फल लागल बा कि ओकर डाली जमीन पर लोटत बाड़ी सन। जेठकी भउजी ओही में बइर तूरे गइली त अंगुरी में कांट गड़ गइल।

अब भउजी के अंगुरी के कांट के निकाली ? भउजी अपना लहुरा देवर पर भरोसा कइले बाड़ी कि उहे कांट निकलिहें। आ उनकर मरद दरद हर लीहन। लोकगीत में झांकी देखी-

'के मोरे कढ़िहें अंगुरी के कांटवा,
हाय रे जियरा?
के ई दरदिया हरिहें मोर, हाय रे जियरा?
देवर मोरे कढ़िहें अंगुरी के कांटवा,
हाय रे जियरा।
संईया दरिदिया हरि लेय, हाय रे जियरा।'

अपना मन के बात जब उ अपना देवर से कहत बाड़ीं त उनकर देवर कांट के कढ़वनी मांगत बाड़े-

'कांट के कढ़वली भउजी,
काहो देबू दानवा, हाय रे जियरा?
काढ़ी देबो अंगुरी के कांट,
हाय रे जियरा।'

उनकर भउजाई कांट के कढ़वनी में हाथ के मुनर देबे के तइयार बाड़ी, बाकिर उनका देवर के मंजूर नइखे। लोकगीत में वर्णन देखीं-

'तहरा के देबो देवर हाथ के मुनरवा,
गोतिनी के देबो गले हार, हाय रे जियरा।
आग लगइबो भउजी हाथ के मुजरवा,
बजर घसइबो गले हार, हाय रे जियरा।।'

भउजाई कहत बाड़ी- 'हे देवर, हम अपना हाथ के मुनर तोहरा के देब आ गोतिनि के गला के हार देब।'

एहपर देवर कहत बाड़े- 'ऐ भउजी, तहरा मुनर के हम आग लगा देब आ तोहरा गला के हार के पत्थर पर घिस देब।'

कांट के कढ़वनी में देवर के का चाहीं, तनी उहो देखीं -

'तोहरो खोंइछवा भउजी, दुई नरियरवा,
हाय रे जियरा।
वोही में से कर एगो दान, हाय रे जियरा।'

देवर कहत बाड़े- 'हे भउजी, तोहरा खोंइछा में दूगो नारियल बा। वोही में से एगो हमरा के दान कर द।' देवर के बात सुनि के भउजाई जबाब देत बाड़ी, तनी उहो देखीं-

'जेकर लागल देवर, साठी रूपइया,
हाय रे जियरा।
सेहू नाहीं कइले नेवान, हाय रे जियरा।
पहिले त खाले भउजी, चोंचवा से चिरई,
हाय रे जियरा।
पाछे खाले खेत रखवार, हाय रे जियरा।'

भाभी कहत बाड़ी - 'हे देवर, जेकर साठ रूपया लागल, उहो नेवान ना कइलन। भला तू कइ से दान लेब ?'

एह पर देवर कहत बाड़े- 'हे भउजी, पहिले चिड़िया चुरूंग खालेला, ओकरा बादे खेत के रखवार खाला।'

एगो दोसर उदाहरण देखीं। एगो मेहरारू के पति परदेश बा। मेहरारू के देवर अपना भउजाई से अपना भइया के सूरत भुला जाये के कहत बा। लोकगीत में झांकी देखीं-

कथि बिनु भउजी हो, ओठवा झुरइले,
कथि बिनु?
ए ढरेला नयना लोरवा, कथि बिनु?
पान बिनु देवरू हो ओठवा झुरइले,
रउरा भइया बिनु,
ए ढरेला नयना लोरवा, भइया बिनु।

एहपर देवर भाभी से पान खाये के आ अपना भइया के सूरत भुला जाये के कहत बाड़े -

खा लेहु भउजी हो, पाकहा पानवा
बिसरि देहु मोरे भइया के सुरतिया।

एहपर भउजाई खीसिया जात बाड़ी आ कहतारी -

'आग लगइबो देवर, पाकल पानवा,
ना बिसरी रउरा भइया के सुरतिया।'

एगो अउर उदाहरण देखीं जवना में पति-पत्नी के हास परिहास के वर्णन बा। पति परदेश जा रहल बाड़े। पत्नी के फिकिर बा कि अब उ केकरा खातिर खाना बनइहे आ केकरा खातिर पान क बीरवा लगइहें-

'पिया मोरे गइले हो, पुरूबी बनिजिया।
के हो जेइहें, हमरो जेवनवा?
घरवा त बाड़े धनि, लहुरा देवरवा।
उहे जेइहें, धनि तोहरो जेवनवा।
देवरू के जेवल मोरा, मनहि ना भइहें।
सकल जगहिं, देवर जूठवा गिरइहें।।'

पत्नी कहत बाड़ी कि पति के पूरब दिशा गइला पर हमार खाना के भोग लगाई? पति कहत बाड़े - 'हे प्राण प्यारी, लहुरा देवर घरे बाड़े, उहे तोहार जेवना जेइहें।' एहपर पत्नी कहत बाड़ी कि देवर के जेंवल हमरा नीमन ना लागी। देवर खाये के त खा लीहें बाकिर दुनिया भर में जूठ गिरइहें, यानि सब जगह कहत फिरिहें।

पति-पत्नी के हास परिहास के एगो अउर उदाहरण देखीं। दूबर पातर पति के मेहरारू केतनों खिया के हार गइल, उ ना मोटइले। उ उनका के गिरगिट कहि के अपना बाबा से एहतरे कहत बिया-

'अपना हि बाबा के, का हम बिगड़नी?
खोज दीहले गिरगिटवा दमाद।
नव मन आटावा के, पुड़िया खिअवनीं।
तबो नाहीं गिरगिटवा मोटइले।
नवमन सरसों के, तेलवा लगवनीं।
तबो नाहीं गिरगिट चिकनइले।
नव मीटर कपड़ा के सूटवा सिअवनी।
तबो नाहीं गिरगिटवा ढंपइले।

एह तरे हमनी देखत बानी कि भोजपुरी लोकगीतकार लोकगीतन का माध्यम से विभिन्न सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक आ राष्ट्रीय समस्यन के संगे-संगे हास-परिहास से भी भोजपुरी लोकगीतन के समृद्ध करे के प्रयास कइले बा लोग। जवन प्रशंसनीय बा।

एह तरे भोजपुरी लोकगीतन में हास परिहास के संक्षेप में चर्चा भइल।

डा0 भगवान सिंह 'भास्कर'
महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
निवास : प्रखण्ड कार्यालय के सामने, लखरांव,
सिवान 841226

लघुकथा

चिनगारी

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

हम आफिस के काम निबटा के पटना से लवटत रहीं। ट्रेन में काफी देर रहे। करीब तीन घंटा से प्लेट फारम प बइठल-बइठल बोर होत रहीं। गाड़ियन के विलम्ब से चले के सूचना सुनि-सुनि के भीतर-भीतर खीझ होत रहे आ रेलवे प्रशासन पर पिनपिनाहट। समय गुजारल बड़ा कठिन होत रहे। अगल-बगल में कवनों जान-पहचान के अदिमीओ ना लउकत रहे कि बोल-बतिया के समय काटल जाव। बोरियत से जूझे खातिर आखिरकार बैग में से एगो पुरान पत्रिका निकालि के उलटि पुलटि करे लगलीं। बाकिर पत्रिका पढे में जी ना रमत रहे। मन के बझावे खातिर झूठो-मूठो के पन्ना उलटत रहीं।

तबे एगो युवती सामने आकर खाड़ हो गइल। हालांकि हमार नजर पत्रिका प गड़ल रहे, मगर आहट से ओकर उपस्थिति के हमरा आभास मिल गइल। अगर उ - 'बाबू जी, बच्चा बहुत भुखाइल बा। कुछ खाये के दीहीं' कहिके आपन हथेली हमरा ओरि ना बढाइत त साइत हम ओकरा तरफ ताके के जरूरतो न समझतीं।

हम नजर उठवलीं। कोई तेरह-चउदह साल के दुबर-पातर, बाकिर सुन्दर नाक-नक्श के एगो सांवर लइकी डेढ-दू बरिस के एगो मरियल अस बच्चा गोदी से चिपकवले खड़ा रहे। ओकर कमसीनी आ कदकाठी देखिके हम अन्दाजा लगावत रहीं कि कोरा में के बच्चा ओकर भाई आ भतीजा हो सकेला। जिज्ञासा वश हम पूछि बइठलीं- 'ई बच्चा तोर भाई ह ?'

'ना, बाबूजी , ई हमार आपन बेटा ह।'

ओकर ई उत्तर सुनि के हम भउचक रह गइलीं। चिहाई के ओकरा ओरि गौर से ताके लगलीं जइसे ओकर उमिर के बढिया से थाह लगावे के चाहत होखीं। अतना कम उमिर के लइकी के बच्चा ! घिन होखे लागल। करुणा आ दया के जगहा घिरना आ उबकाई आवे लागल। सोचे लगली - निगोड़ी के आपन पेट भरे के ठेकाना नइखे। भीख मांगत बाड़ी। उपर से कोढ़ में खाज के तरह ई बलाय ! पेट के आगि से बेसी ससुरी के आपन तन के अगिन बुझावे के पड़ गइल। एही उमिर से देह में आगि लेसले रहे ! छि...छि..! भीतर-भीतर हम ओकरा प झल्ला उठली। आ ना चहलो प मुंह से निकल गइल- 'तहरा पेट के भूख से अधिक शरीरे के भूख सतावत रहे, देहे के आगि के चिंता बेसी रहे ? आपन पेट भरत नइखे, उपर से छन भर के सुख-मउज के फेरा में एगो अउर मुसीबत मोल लेहलू ?

हमार दहकत सवाल से उ तिलमिला गइल। हमार बात ओकरा दिल प बरछी नियन लागत। व्यंग भरल लहजा में हमरा प प्रहार कइलस- 'बाबू जी ई मुसीबत, ई बलाय रउवे जइसन सफेद पोश लोगन के किरिपा ह। रउवे सभे के जोर-जुलुम के निसानी - हवस के चिन्ह - आगि के चिनगारी ह ई।

हम बेजबाब हो गइली। अइसन लागल जइसे उ हमार नैतिक-बोध के गाल प कसिके तमाचा जड़ देले होखे। अतना कहि के उ हमरा भिरी से चल दिहलस। हम अइसे अपराध बोध से भर गइली। सिर शरम से झुक गइल।

हम ओकरा कुछ ना दे सकलीं, मगर उ हमरा के बहुत कुछ दे गइल। हमरा चेतना के एगो झटका, मन में ई सड़ल समाज का प्रति घिरना आ छोभ। दिल के कोना में एगो अनजान अस टीस अउर सोच के एगो नया दिसा।

शिवपूजन लाल विद्यार्थी,
प्रकाशपुरी, आरा, भोजपुर

गजल

मत कह जिनगी बेमानी बा

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

मत कह.. जिन्दगी बेमानी बा,
खाली धूप-छांह के कहानी बा।

मायूस मत होख.. मंजिल मिली,
भले सफर में कुछ परिसानी बा।

एह पीरा के सईंचि के रख..,
उनकर जुल्मों-सितम के निसानी बा।

ई जनतंत्र बस कहे भर के बा,
आजो केहू राजा, केहू रानी बा।

हमेसे फस्ले-बहार ना मिली,
जिन्दगी में आन्हियो-पानी बा।

समेस्या से कटि के जूझ.. लड़..,
मुंह चोरावल त नादानी बा।

आजादी से केकरा का मिलल,
उनका छत त हमरा पलानी बा।

गजल

दिल के दरद कहां ले जाईं

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

दिल के दरद कहां ले जाईं,
व्याकुल मन कइसे बहलाईं ?

खुद अन्हार में भटकत बानी,
कइसे उनका राह दिखाईं ?

छल-फरेब के कांट बिछल बा,
कइसे आगा गोड़ बढ़ाईं ?

पत्थर के घर, पत्थर इन्सा,
बिरथा आपन लोर बहाईं।

बाहर-भीतर सगरो खतरा,
कहंवां भागीं, कहां लुकाईं ?

मानवता के खून करत बा,
जाति-धरम के निठुर कसाई।

शिवपूजन लाल विद्यार्थी,
प्रकाशपुरी, आरा, भोजपुर

कविता

बारहमासा

सुरेश कांटक

करेजवा साले, ए मोर राजा,
बितल साले-साले ए मोर राजा।

रंग-राग ले ले के, तरसल फगुनवा
राजा बसंत सजल, धरती के धनवा
बिगड़ि गइल चाले, ए मोर राजा।

चईत महिनवा विरहवा सतावे
अलसल भोरवा के पुरवा चेतावे
भुलइल.. कवना जाले, ए मोर राजा।

दंवरी-दंवात बइसाख दिन-रतिया
घमवा में बिगड़ेला सभके सुरतिया
हो गइनी बेहाले, ए मोर राजा।

जेठवा के लुकवा झंकोर देलस देहिया
नदी-नारा सुखल, दरार भइल नेहिया
पड़ल छाले छाले, ए मोर राजा।

उमसल असढ़वा बेहाल भइल हलिया
फिस-फुस घमवा, बेकल गांव गलिया
उड़ाव.. मत गाले, ए मोर राजा।

सावन के बदरा गरजि के डेरावे
बियवा डलाला, कजरिया ना भावे
देखावे रूप काले, ए मोर राजा।

भादो में कड़के आ बरिसे बदरिया
रोपनी आ नदी-नार भरल अहरिया
बजावे झिंगुर झोल, ए मोर राजा।

घमवा कुआरवा दशहरा ना भावे
रेंड़ा प धनवा आ धरती सुखावे
सपन हाथी पाले, ए मोर राजा।

कातिक में मुंह खोल ताकेला धनवा
फुलवा के असरे टंगाइल परनवा
झरेला ओस खाले, ए मोर राजा।

अगहन में कटिया आ गोलहथ सोहावे
ठंढी बयरिया जियरवा कंपावे
बजाव.. मत ताले, ए मोर राजा।

पुसवा के फुस दिन चइती बोआइल
जड़वा में जोड़ी बिना, मन घबड़ाइल
कमइया के खालें, ए मोर राजा।

माघ के टुसरवा पुअरवा ओढ़ावे
चलिया तोहार तनिको नाही भावे
भइल जीव के काले, ए मोर राजा।

अबहूं से आव.. ना देख.. सुरतिया
मोहले बिया तोहे कवन सवतिया
जइब नरक-नाले, ए मोर राजा।

कांटक चिरइंया उड़ी जब अकासे
धरती सरापी, रही ना कुछ पासे
रही काले काले, ए मोर राजा।

सुरेश कांटक,
कांट, ब्रह्मपुर, बक्सर, बिहार - 802 112